Pratnakīrti, Volume 4, Issue 1, 2023 ISSN: 2322-0694

वर्ष 2024 में संस्थान की गतिविधियाँ

सचिव

प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी

विविध प्रकार के शोध-अनुसन्धान, सांस्कृतिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन यह संस्थान अपने स्थापना-वर्ष 2004 ई० से ही करता आ रहा है और प्रत्नकीर्ति के रूप में पुनर्गठित होने के बाद इन कार्यक्रमों में और भी विविधता और सार्वभौम उपयोगिता का सञ्चार हो आया। वर्ष 2023 ई० के प्रथम छह महीनों में आयोजित ऐसे कुछ कार्यक्रमों और संस्थान की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रत्नकीर्ति के पाठकों हेतु प्रस्तुत किया जाता है-

1 विविध वर्गों में सदस्यता प्रदान पर रोक

'प्रत्नकीर्ति' के रूप में संस्थान के पुनर्गठन पर निर्णय लिया गया था कि संस्थान अपनी परियोजनाओं तथा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत विश्रुत युवा विद्वानों को 'विशिष्ट' 'आजीवन' तथा 'साधारण'-सदस्यता देगा। विगत दो वर्षों में लगभग ६० सदस्य बनाए गए। किन्तु दो वर्षों के अनुभव से ज्ञात हुआ कि संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति में 'सदस्यता' आवश्यक नहीं। अतः नई सदस्यता पर अग्रिम निर्णय तक रोक लगा दी गई।

2 वार्षिक आर्थिक सहायता लेने पर रोक

विगत दो वर्षो (2021-22, 2022-23) में संस्थान के क्रियाकलापों के सुचारु संचालन हेतु सदस्यों से वार्षिक रूप में कुछ आर्थिक सहायता (चंदा) देने की अपील की गई। कुछ सदस्यों से राशि प्राप्त भी हुई जिसकी सूचना 'प्रत्नकीर्ति' के तत्तत् अंकों में प्रकाशित की गई है। किन्तु ऐसी किसी आर्थिक सहायता के माँगे जाने और उनके प्राप्त होने में; दाता एवं ग्रहीत, दोनों की ओर से एक प्रकार की 'झिझक' का अनुभव किया गया। दूसरे कि प्राप्त होने वाली धनराशि संस्थान के खर्चों के बराबर भी न ठहरती। आधे से अधिक धनराशि वार्षिक लेखा-जोखा निरीक्षण के कार्य में ही खर्च हो जाता। अतः निर्णय लिया गया कि वर्ष 2023-24 से किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता सदस्यों से नहीं माँगी जाएगी। संस्थान के अत्यावश्यक खर्च; संस्थान के खाते में संग्रहीत धन से तब तक उठाए जाएँ जब तक यह साथ दे। बाद का निर्णय भविष्य पर छोड़ दिया जाए।

3 स्थापना महोत्सव-24

संस्थान के स्थापना-महोत्सव इस वर्ष दिसम्बर माह में मनाया गया और इसके अन्तर्गत केवल एक कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें अच्युतराव मोडक प्रणीत 'गीतसीतापतिः' नामा

लालाशंकर गयावाल एवं उमेश कुमार सिंह (सम्पा०) पृष्ठ 139-140
© प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोधसंस्थान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

महाकाव्य; जो कि लगभग 250 वर्ष पूर्व प्रणीत हुआ था, के सम्पादित संस्करण का लोकार्पण किया गया। दिनांक 29-12-2024, रविवार, सायं 7 से 9 बजे रात्रि तक ऑनलाइन आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ० राइचरण कामल द्वारा सम्पादित 'गीतसीतापतिः' का लोकार्पण इस युग के विश्रुत लेखक, आचार्य, समीक्षक एवं सम्पादक प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने कर-कमलों से किया। कार्यक्रम में देश के विविध प्रान्तीय 70 से अधिक श्रोता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सं०-सचिव (शोध) डॉ० विमलेन्दु कुमार त्रिपाठी ने किया। इति शम्....